ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 254-256

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

ब्रिटिश शासन और सर सैयद अहमद का साम्प्रदायिक चिन्तन

अरुण कुमार तिवारी Email : draktiwaripbh@gmail.com

Received- 28.06.2020, Revised- 01.07.2020, Accepted - 04.07.2020

सारांश– ***इस शोध पत्र में मैंने यह समझने का प्रयास किया है कि जो सर सैयद अहमद अपने राजनीतिक जीवन के प्रारम्भिक दौर में राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत थे, वे लगभग एक दशक बाद ही भारत में ब्रिटिश शासन के समर्थक क्यों हो गये? वे इस बात को लेकर आगे क्यों बढ़े कि मुसलमानों को कांग्रेस दल का नहीं अपितु अंग्रेजी शासन व्यवस्था का समर्थन करना चाहिए? सैयद अहमद के विचारों को दो भागों में विभक्त करके देखना उचित होगा। अपने चिन्तन के शुरूआत में वे अंग्रेजी शासन के विरोधी और अंग्रेजों द्वारा भारत में मुगल शासन के अन्त को बहुत ही कष्टदायक मानते थे। इसके लिए वे मुसलमानों के एकमात्र नेता बनने में लग गये। उलेमाओं तथा मौलवियों के एकाधिकार को समाप्त कर सैयद ने राजनीति को धर्म से मिला दिया और मुस्लिम धार्मिक ग्रन्थों की मनमानी व्याख्या करके मुसलमानों को यह समझाने का प्रयास किया कि उनके नेतृत्व में ही अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत उनका हित सुरक्षित है। इस प्रकार सर सैयद अहमद भारतीय मुसलमानों को मुख्य धारा से अलग करके साम्प्रदायिकता की ओर बढ़ाने का कार्य करने लगे।***

कुंजीभूत शब्द–प्रारम्भिक दौर, राष्ट्रीयता, ओत–प्रोत, दशक, शासन, समर्थक ।

एसोसिएट प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान विभाग, मुनीश्वर दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय प्रतापगढ़ (उ0प्र0), भारत

अनुरूपी लेखक

1858 के बाद सैयद अहमद अंग्रेजों का विश्वास पात्र बनने का हर संभव प्रयास करने लगे। अंग्रेजों की निकटता प्राप्त करने के लिए वे मुसलमानों का अंग्रेजी सत्ता को समर्थन करने का आह्वान करने में लग गये। इस कार्य के लिए उन्होंने मुसलमानों में हिन्दुओं के प्रति घृणा का भाव भरने का कार्य प्रारम्भ किया। भारत के अनपढ़ एवं संकीर्ण सोच वाले मुसलमानों ने सैयद का साथ दिया। किन्तु इसके विपरीत प्रगतिशील मुसलमानों ने कांग्रेस एवं अन्य राष्ट्रवादी संगठनों को अपना समर्थन देकर सैयद की राष्ट्रविरोधी एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन विरोधी नीतियों का समर्थन नहीं किया। वास्तव में सैयद के चिन्तन में जो परिवर्तन आया उसके पीछे प्रमुख कारण उनका धीरे–धीरे साम्प्रदायिक होना एवं अपने को अंग्रेजों के निकट ले जाकर शासन सत्ता का लाभ लेना था।

सैयद अहमद ने भारतीय मुसलमानों को यह समझाने का प्रयास किया कि वे भारत को अपना राष्ट्र न माने क्योंकि मुसलमानों के पूर्वज भारत के बाहर से आये थे और उन्होंने शक्ति के बल पर भारत में अपनी शासन सत्ता स्थापित की थी। 1887 में लखनऊ में अपने एक भाषण में उन्होंने कहा कि "हम वह हैं जिन्होंने भारत पर छः या सात शताब्दियों तक राज्य किया है। हमारी कौम उन लोगों के खून से बनी है, जिनसे न केवल अरब बल्कि एशिया और यूरोप भी कांपते थे। हमारी कौम ने अपनी तलवार से भारत को जीता था, यद्यपि यहाँ के लोग सिर्फ एक ही धर्म के मानने वाले थे"। उनके इस तरह के भाषण से यह स्पष्ट है कि वे न तो स्वयं भारत को अपना राष्ट्र मानते थे और न ही हिन्दू–मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। उन्होंने मुसलमानों का आहवान करते हुए 14 मार्च 1888 को कहा कि अधिक से अधिक सरकारी पद प्राप्त करने और षासन के माध्यम से अपनी शिक्षा का प्रसार करने के लिए अंग्रेजों का विश्वास जीतना आवश्यक है। उन्होंने यह भी आहवान किया कि मुसलमान बंगाल के राजनीतिक आन्दोलनकारियों से दूर रहें ताकि अंग्रेजों के प्रति हमारी निष्ठा बनी रहे। भारत में ब्रिटिश शासन केवल चन्द वर्षों के लिए ही नहीं, अपितु सदा के लिए बना रहना चाहिए। तभी बहादुर और अच्छे मुसलमानों का भविष्य सुरक्षित रह पायेगा। इस तरह का विचार केवल उनके साम्प्रदायिक सोच को प्रदर्शित करता है।

निर्वाचन एवं प्रतिनिधित्व के विषय में भी सैयद अहमद की सोच केवल साम्प्रदायिक थी। उन्होंने कहा कि निर्वाचन से बहुसंख्यक जनसमुदाय अल्पसंख्यकों के हितों पर छा जायेगा और अशिक्षित जनता भेदभाव के लिए शासन–सत्ता को दोषी ठहरायेगी। अतः निर्वाचन की जगह एक–तिहाई सदस्यों का मनोनयन ही उचित है जिससे शासकीय संरक्षण में अल्पसंख्यक समुदाय के हितों को सुरक्षित रखा जा सके। इसीलिए उन्होंने कांग्रेस द्वारा सुझाये गये वायसराय की परिषद के कुछ सदस्यों को निर्वाचित करने के विचार को स्वीकार नहीं किया। उनकी राय थी कि वायसराय की परिषद का गठन हिन्दू तथा मुसलमान में बराबर स्थान वितरित करके किया जाय। निर्वाचन पृथकता के आधार पर कराये जायँ। मुसलमान मुसलमानों को तथा हिन्दू हिन्दुओं को निर्वाचित करें। इस विचार को देखकर यह कहना उचित होगा कि सैयद अहमद आधुनिक भारत में पृथकता एवं साम्प्रदायिक राजनीति के प्रवर्तक थे। उनके इन्हीं विचारों को आगे बढ़ाने का काम मोहम्मद अली जिन्ना ने किया जिसकी परिणति भारत विभाजन के रूप में सामने आयी। सैयद अहमद ने उन सभी सरकारी अधिनियमों का विरोध किया जो भारत में जनतांत्रिक एवं प्रतिनिध्यात्मक संस्थाओं को जन्म दे सकते थे। वे समाचार पत्रों पर सरकारी नियंत्रण

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

के पक्ष में थे जिससे ब्रिटिश शासन की नीव मजबूत रहे और मुसलमानों को अवसरवादिता के लिए प्रेरित करने वाले उनके विचारों को कोई चुनौती न मिल सके। इसीलिए उन्होंने 'वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट' का समर्थन किया जिसके अन्तर्गत अंग्रेजी शासन के विरुद्ध मत व्यक्त करना दण्डनीय था।

सैयद अहमद का शिक्षा के क्षेत्र में किया गया कार्य भी केवल अंग्रेजों के प्रति भक्ति से प्रेरित था। वे ऐसे शिक्षित मुसलमानों को तैयार करना चाहते थे जो अंग्रेजी शासन के उच्च व लाभकारी पदों को प्राप्त करके अंग्रेजों को बल प्रदान कर सकें। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में मुसलमानों द्वारा स्वयं अपने अनुकूल शिक्षा व्यवस्था का समर्थन किया। उनका उद्देश्य धर्म निरपेक्षता न होकर ऐसी शिक्षा पद्धति का विस्तार करना था जिससे मुसलमानों को अन्य धर्मो में पृथक् रखा जा सके। अलीगढ़ विश्वविद्यालय के भवन निर्माण में उन्होंने अनेक हिन्दू राजाओं से सहायता प्राप्त की। किन्तु उसको उन्होंने केवल स्वयं के प्रयासों का परिणाम बताया। यह भी उनकी साम्प्रदायिक सोच एवं संकीर्ण मानसिकता का प्रतीक है। मुसलमानों के हितों के संरक्षण के नाम पर सर सैयद अहमद ने 1883 में 'मोहम्मड़न पोलिटिकल एसोसिएशन' की स्थापना की और उसके उद्देश्यों को स्पष्ट किया। "यह एसोसिएशन ब्रिटिश राज्य के हितों को ध्यान रखते हुए मुसलमानों के विकास का कार्य करेगा। मुसलमानों की आवश्यकताओं की योजनाओं को बहुत ही विनीत रूप में सरकार के समक्ष प्रस्तुत करेगा। सरकार के विधि–प्रस्तावों पर विचार करना तथा ऐसे कार्यो के विषय में सरकार को सूचना देना जो देश की उन्नति में बाधक हों"। सैयद अहमद के इस संगठन का भी एकमात्र उद्देश्य मुस्लिम हित एवं अंग्रेजी शासन को प्रसन्न रखना था।

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद सैयद अहमद ने भारतीय मुसलमानों को कांग्रेस से दूर रखने के लिए 'इण्डियन पैट्रियाटिक एसोसिएशन' की स्थापना की। उनके द्वारा बताये गये इसके उद्देश्यों का अध्ययन किया जाय तब भी यही स्पष्ट होता है कि वे कांग्रेस के राष्ट्रीय आन्दोलन से दूर रहकर केवल अंग्रेजों की भक्ति में ही विश्वास रखते थे। उन्होंने कहा कि "मेरे संगठन द्वारा भारतीय मुसलमानों तथा कांग्रेस विरोधी हिन्दुओं के विचारों से ब्रिटिश सरकार को अवगत कराया जायेगा तथा अंग्रेजी राज्य को दृढ़ बनाने तथा भारत में शान्ति एवं सुरक्षा बनाये रखने का प्रयास किया जायेगा। ब्रिटेन को यह भी अवगत कराया जायेगा कि भारत की पूरी जनता कांग्रेस के विचारों के साथ नहीं है"। सर सैयद अपने इस प्रयास से भी सन्तुष्ट नही थे और 1893 में 'मोहम्मडन एंग्लो ओरिएंटल डिफेन्स एसोसिएशन' नामक एक और संस्था की स्थापना की। इस संस्था का प्रमुख उद्देश्य मुस्लिम युवाओं को कांग्रेस के राष्ट्रीय मंच से दूर रख करके अपने संस्था के अन्तर्गत एकत्रित करना और लोगों को यह बताना था कि कांग्रेस की तुलना में मुसलमानों के हितों का प्रतिनिधित्व इसी संस्था के माध्यम से संभव है। अपने इस संगठन के माध्यम से सैयद अहमद द्वारा मुसलमानों को तकनीकी शिक्षा संस्थाओं में सीधे प्रवेश, विधायिका तथा स्थानीय निकायों में मुसलमानों के समुचित प्रतिनिधित्व तथा साम्प्रदायिक प्रणाली के आधार पर पृथक निर्वाचन पद्धति की मांग की गयी। इस प्रकार यदि देखा जाय तो सैयद अहमद ने जितने भी संगठन बनाये उसका तीन प्रमुख उद्देश्य दिखाई देता है–

(1) अंग्रेजी शासन का पूरा समर्थन करना,
(2) हिन्दुओं से अलग करके केवल मुस्लिम हितों की बात करना एवं मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काना,
(3) भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में कांग्रेस या अन्य कोई भी संगठन जो कार्य कर रहे थे उसको निष्फल करने का पूरा प्रयास करना। इससे भी यही सिद्ध होता है कि उनकी सोच भारत विरोधी एवं साम्प्रदायिक थी।

सर सैयद अहमद ने अपनी राजनीति का आधार इस्लाम धर्म को बनाया। किन्तु अंग्रेजों को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने इस्लाम की व्याख्या भी अपनी सुविधा के अनुसार की। उनके द्वारा मेरठ में दिये गये भाषण से स्पष्ट है कि वे इस्लाम की मनमानी एवं स्वार्थनुरूप व्याख्या करते रहे। उन्होंने कहा कि "इन प्रान्तों के हिन्दू हमारा साथ छोड़कर बंगालियों के साथ मिल गये हैं। तब हमें उस कौम के साथ मिल जाना चाहिए जिसके साथ हम मिल सकते हैं। कोई मुसलमान इस बात से इंकार नहीं कर सकता कि अल्लाह ने कहा है कि ईसाइयों के अतिरिक्त किसी भी धर्म के अनुयायी मुसलमानों के मित्र नहीं हो सकते हैं। जिसने कुरान पढ़ा है और जो इस पर यकीन रखता है, वह जान सकता है कि हमारी कौम किसी अन्य कौम से हमदर्दी की आशा नहीं कर सकती। हमें अल्लाह की आज्ञा के अनुसार ईसाइयों के प्रति निष्ठावान और मित्रतापूर्ण बने रहना चाहिए"। सैयद अहमद के इस वक्तव्य से भी यही स्पष्ट होता है कि वे अंग्रेजों की निगाह में अपनी महत्ता बनाये रखने के लिए मुसलमानों को धर्म के नाम पर भ्रमित करते रहे।

अपनी साम्प्रदायिक सोच को निरन्तर विस्तार देने का काम सर सैयद करते रहे। इसके लिए वे मुसलमानों की बरगलाने का भी कार्य करते रहे। उन्होंने कहा कि "भारत के बहुसंख्यक हिन्दुओं को मुस्लिमों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखना चाहिए अन्यथा शक्ति के बल पर मुसलमान उनका जीवन कठिन बना देंगे। मुसलमान यद्यपि संख्या और अंग्रेजी शिक्षा में कम हैं, लेकिन वे अपनी स्थिति सुरक्षित रख सकेंगे। मान लीजिए ऐसा नहीं हो, तब उनके मुसलमान पठान भाई पहाड़ी दर्रों से टिड्डी दलों की भाँति आयेंगे और उत्तर से बंगाल के अन्त तक खून की नदियाँ बहा देंगें"। वास्तव में सर सैयद अहमद का यह भी उद्देश्य था कि भारत के मुसलमानों की प्रगति हो। किन्तु इसके लिए उन्हों ने धमकी एवं साम्प्रदायकिता का जो मार्ग चुना वह उचित नहीं था। हिन्दुओं के खिलाफ मुसलमानों को बरगलाने में वे कुछ हद

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

तक सफल रहे। किन्तु इसके लिए उनका मार्ग मुसलमानों की कोई प्रगति नहीं कर सका। अंग्रेजों की चापलूसी करके उन्होंने जो कुछ पाने का प्रयास किया वह अधिकांश मुसलमानों के उपयोग का नहीं रहा। कुछ शिक्षित और स्वार्थी मुसलमानों को षासन में पद जरूर मिल गये।

सैयद अहमद के सम्पूर्ण चिन्तन का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि अपने राजनीतिक जीवन के प्रारम्भिक दौर में वे जिस भारतीय राष्ट्रीयता की बात करते थे, वह उनका बनावटी रूप था। वे एक कट्टर साम्प्रदायिक व्यक्ति थे। वे कांग्रेस का विरोध सिर्फ इसलिए करते थे कि अंग्रेजी शासन उनको महत्व दे। मुसलमानों को बरगलाने का कार्य भी वे इसीलिए करते थे जिससे अंग्रेज यह समझ सकें कि भारत का मुसलमान कांग्रेस के साथ नही अपितु सैयद अहमद के साथ है। अन्ततः यह कहना उचित होगा कि सैयद अहमद स्वयं ही नहीं अपितु उनका सम्पूर्ण चिन्तन साम्प्रदायिकता से ओत–प्रोत था।

शोध–पत्र का सारांश– अपने चिन्तन के प्रारम्भिक दौर में सर सैयद अहमद जिस राष्ट्रीयता की बात करते रहे वह केवल उनका छद्म रूप था। प्रारम्भ में उनका उद्देश्य मुसलमानों की शिक्षा एवं उनका विकास अवश्य था।किन्तु धीरे–धीरे वे स्वयं को महत्वपूर्ण बनाने के लिए अपनी कौम का दुरुपयोग करने लगे। कांग्रेस सहित किसी भी अन्य संगठन के द्वारा चलने वाले राष्ट्रीय आन्दोलन को उन्होंने सदैव कमजोर करने का प्रयास किया। वे स्वराज्य एवं स्वदेशी आन्दोलनों का भी विरोध करते रहे। उनके द्वारा 1883 में स्थापित 'मोहम्मडन पोलिटिक्ल एसोसिएशन', 1887 में स्थापित 'इण्डियन पैट्रियाटिक एसोसिएशन' तथा 1893 में स्थापित 'मोहम्मडन एंग्लो–ओरिएण्टल डिफेन्स एसोसिएशन' आदि का एकमात्र उद्देश्य मुस्लिम हित, हिन्दू एवं कांग्रेस का विरोध तथा अंग्रेजों का समर्थन करना मात्र था। अतः वे भारत राष्ट्र के विरोधी, अंग्रेजों के समर्थक कट्टर साम्प्रदायिक व्यक्ति थे। उनको भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के समय साम्प्रदायिक राजनीति का प्रवर्तक कहना भी उचित होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मोहम्मद अली : 'Select Writings and Speeches of Maulana Mohd. Ali', मो0 अशरफ प्रकाशन, लाहौर, 1944, पृष्ठ–13
2. सर सैयद अहमद : 'The Present State of Indian Politics', पायनियर प्रेस, इलाहाबाद, 1888, पृश्ठ–17–18
3. सर सैयद अहमद : वही, पृश्ठ–301–302
4. सर सैयद अहमद : वही, पृष्ठ–14
5. एम0एस0 जैन : 'आधुनिक भारत में मुस्लिम राजनीतिक विचारक', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1973, पृष्ठ–30
6. एम0एस0 जैन : वही, पृष्ठ–32–33
7. सर सैयद अहमद : 'The Present State of Indian Politics',, पायनियर प्रेस, इलाहाबाद, 1888, पृश्ठ–49–50
8. सर सैयद अहमद : वही, पृष्ठ–37–38

*****